महाप्रलय बनाम धर्मयुध्द-२

२१ दिसंबर, २०१२ केवल एक ग्रहण

"मनुष्य हवा में उड़ेगा उसके लबें लहराते बालों से सैकड़ों घोड़ों के हिनहिनाने की आवाज आयेगी । औरतें, पुरुषों के कपड़े पहनेगी, पुरुषों की तरह ही अपने बाल कटवायेगी । ग्रेट ब्रिटेन के तट पर खड़े होकर मनुष्य फ्रांस के तटपर खड़े व्यक्ति से बोलते पत्थरों से बात करेगा । आग उगलते रथ अपने आप चलेगें । थेम्स नदी खून से भर जायेगी, बहुत से लोग मरेगें" ।

पश्चिमी जगत के ज्योतिषियों द्वारा की गई ये एसी भविष्यवाणियां हैं जो समय के साथ सच हुई हैं । मनुष्य हवा में उड़ेगा ये बात अब सच सिध्द हो चुकी हैं । हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर के लबें घूमते पंख घोड़ो के हिनहिनाने जैसी ही आवाज प्रकट करते हैं । औरतें अब पुरुषों के कपड़े पहनती हैं और बाल भी कटवाती हैं । सेल फोन अथवा मोबाइल फोन से अब कंहि भी बात की जा सकती है। फिर ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस के तट तो अब पुरानी बात हो गई हैं । आग उगलते रथ, टैकों के रुप में हमारे सामने हैं जो अपने आप चलते हैं । थेम्स नदी खून से कई बार भर चुकी हैं और कई लोग योरोप के युध्दों में मारे जा चुकें हैं । ये हम उनके इतिहास से देख सकते हैं ।

दरअसल योरोप अथवा पश्चिमी जगत ने बहुत से युध्दों को देखा हैं और उन्हे इसकी आदत सी पड़ चुकी हैं । अपने रक्तरंजित इतिहास को वे लोग खूब जानते हैं । पचास, साठ वर्षो में अगर कोई बड़ा युध्द ना हो तो वे लोग इसकी अशंका से डरने लगते हैं । आज जब दूसरे विश्व युध्द को साठ वर्ष गुजर चुके हैं तो वंहा एक बेचैनी सी व्याप्त होने लगी हैं । उनके इतिहास में एसा कभी हुआ नही हैं कि साठ वर्ष गुजर जायें और कोई बड़ा युध्द ना हो । ट्रॉय के युध्द से लेकर दूसरे विश्व युध्द तक का हम उनका इतिहास देखें तो हम जानेगें कि जब भी वंहा किसी देश अथवा राजा के पास शक्ति बढ़ी हैं तो उसने युध्द का विकल्प अपनाते हुए अपनी शक्ति को और बढ़ाना चाहा हैं । इससे वंहा युध्द की परंपरा सी बनी हुई हैं ।

अब पश्चिमी जगत को ये तो यकिन हैं कि कोई बड़ा युध्द होने वाला हैं । परन्तु उसके तबाह कर देने वाले नतिजों से वे लोग डरे हुऐ हैं । इसलिये कि जैसे जैसे समय गुजरा हैं युध्दों के परिणाम ज्यादा भंयकर और उनके स्तर बढ़ते रहे हैं । अब जब परमाणु हथियारों का जखीरा हर बड़े देश के पास हैं तो इस परमाणु शक्ति के इस्तेमाल का समय भी आन पहुचा हैं । क्योंकि, इसका इस्तेमाल अगर युध्द में नही होगा तो इस जखीरे का आखिर होगा क्या ?

एसे में पश्चिमी जगत का बुध्दीजीवी वर्ग इस चिंता में हैं, कि क्या दुनिया समाप्त होने वाली हैं ? क्या इसका कारण कोई विश्वयुध्द होगा यां कोई दैवीय आपदा ? और एसे में उन्हे याद आते हैं अपने ज्योतिषि, जिनका अब से पहले कोई अता पता भी नही हुआ करता था । नॉस्ट्राडॉमस की भविष्यवाणियों का तो जो उन्हौने कबाड़ा किया हैं उसके लिये तो उनसे स्वंय नॉस्ट्राडॉमस की आत्मा ही समझेगी ।

नॉस्ट्राडॉमस जब अपनी किसी उक्ति में कहते है। कि "बीसंवी सदी के अंत से पहले वाले वर्ष के सातवें मास में दो बड़ी चट्टानें आपस में टकरायेंगी और समाप्त हो जायेगी" अर्थात जुलाई, १९९९ का समय । तो इसे पश्चिमी जगत का बुध्दीजीवी वर्ग झट से सिंतबर २००१ के वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर वाली घटना से जोड़कर दुनियां समाप्त होने की अपनी अशंका को सही ठहराने लग जाता हैं । तारिखों की गड़बड़ के लिये वे जुलियन कैलेन्डर को जिम्मेदार ठहरा देते हैं और दुनियां समाप्त होने के अपने हौव्वे को स्थापित रखते हैं । इसके अलावा भी नॉस्ट्राडॉमस की कई एसी भविष्यवाणियां हैं जिसका उन लोगों ने अपने हिसाब से मतलब निकाला हैं और दुनियां को डराया हैं ।

'माया' के २१ दिसबंर २०१२ के कैलेन्डर की बात तो वो लोग करते नही थकते हैं । जबकि सितारों पर अपनी पैनी निगाह रखने के बावजूद 'मायावासी' अपने ही पतन की बात जान नही पाये थे । हालाकि उनके पतन का कारण भी प्रकृति से खिलवाड़ ही था । अपने समय में वे लोग पत्थर और पहिये तथा रस्सी से बने औजार इस्तेमाल करते थे क्योंकि धातु के इस्तेमाल की बात वो जानते ही नही थे । चूना पत्थर के इस्तेमाल से उन्हौने बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित किया था । सिमेन्ट बनाने का पहला सफल प्रयास 'मायावासियों' ने ही किया था । पक्की सड़कें बनाने का कार्य भी सबसे पहले उन्हौने ही किया था । पत्थरों के साम्राज्य को स्थापित करने के लिये उन्हौने जो सिमेन्ट बनाया था उसे बनाने के लिये उन्हौने लाखों एकड़ के वृक्ष जलायें थे और फलस्वरुप प्रकृती का सन्तुलन बिगड़ गया और प्राकृतिक संसाधन कम हो गये और बचे खुचे संसाधनों पर नियंत्रण करने के लिये वे लोग आपस में झगड़ने लगे । जैसे आज खाड़ी देशों के तेल के लिये नियंत्रण की लड़ाई चल रही हैं ।

'माया सभ्यता' के लोग कुकुरकान नामक एक देवता को भी बहुत मानते थे । इसी कुकुरकान के निर्देशन में माया सभ्यता का विकास हुआ था । अब ये कुकुरकान कोई देवता था यॉ कोई हाड मास का व्यक्ति, ये तस्वीर स्पष्ट नही हो पायी हैं । परन्तु एक दिन ये कुकुरकान एक नाव में बैठकर समुन्द्र में कंहि खो गया । जाते जाते उसने माया वासियों से कहा कि एक दिन वो अवश्य ही वापस आयेगा परन्तु वो नही आया । माया लोगों की पुस्तकों में एसे संकेत हैं कि कुकुरकान आया भी समुन्द्र से ही था । नरबली की प्रथा भी माया सभ्यता में आम थी । नरबली के लिये निश्चित जीते जागते व्यक्ति का सीना चीरकर उसका दिल निकालकर पुजारी को दिया जाता था और पुजारी उस दिल से रिसते खून का भोग देवताओं को लगाया करता था । बहरहाल कुकुरकान क्यों आया था और क्यों चला गया इसका कोई सन्तुष्टिपुर्ण उत्तर नही मिलता हैं । परन्तु कुकुरकान के चले जाने से माया वासियों के आत्मबल और आत्मविश्वास में कमी आने लगी वे लोग कुकुरकान की वापसी का बेसब्री से इंतजार करते रहे । भविष्यदृष्टा मायावासी अपने भविष्य से डरे हुऐ थे और मानते थे कि भविष्य में होने वाली घटनाओं से वे मुकाबला नही कर सकते । इधर प्राकृतिक संसाधनो की कमी भी अपना अभाव दर्शाने लगी जिससे उनका आत्मविश्वास और भी कम होने लगा ।

इस डर और आत्मविश्वास की कमी के कारण अव्यवस्था फैलने लगी । फिर एक दिन स्पैनिश लोग माया सभ्यता के बीच जा पहुचें और माया लोगों ने समझा कि उनका देवता कुकुरकान आ पहुचा हैं । स्पैनिश लोगों को उनकी नरबली प्रथा और देवताओं के प्रति अंधविश्वास से चिढ़ हो आयी और उन्हौने उनपर हमला बोल दिया । अव्यवस्थित, आत्मविश्वास की कमी और भविष्य से डरे हुऐ माया सभ्यता के लोग जल्दी ही हार गये । रही सही कसर स्पैनिश लोगों ने उनके घरों को आग लगाकर पुरी कर दी । फिर धीरे धीरे दो हजार वर्षो से चली आ रही माया सभ्यता १५२९ में विलुप्त होने लगी और आज उसका नामोंनिशान तक नही हैं । क्या इतना सब 'मायावासी' नही देख पाये थे ? सितारों की गणना का 'भविष्य' मूल विषय हैं, फिर क्या कारण हैं कि 'माया' के लोग अपना ही पतन नही देख पाये ? इसलिये कि वे लोग केवल ग्रहों की गणना कर सकते थे और वो भी ग्रहणों की गणना विशेष तौर पर करते थे । अब जब २१ दिसंबर, २०१२ को सूर्य और पृथ्वी, ब्लैक होल के साथ एक सीध में आ रहे हैं तो ये गणना उन्हौने बहुत पहले कर ली थी । उन्हे लगता हैं कि ये कोई खास ग्रहण हैं और इसके नतिजे भी कुछ खास होगें । बस इतनी सी बात हैं ।

आज हम अपने संसाधनों को तो बचाने में लगे हैं । इसलिये ये डर तो हमे नही होना चाहिये कि संसाधनों की कमी हमारे विनाश का कारण बनेगी अथवा तो प्रकृति से खिलवाड़ हम नही करेगें । बाकि बचा महाशक्तियों के दिलचस्पी का कारण । वो हैं खाड़ी देशों का तेल जिससे पश्चिमी देश धनवान बने हैं और दूसरी महाशक्तियां इसी के पीछे पड़ी हैं । इसी से आतंकवाद ने सिर उठाया हैं ।

नॉस्ट्राडॉमस, स्टाम बर्गर, बुक ऑफ रिवॉल्युशन, मेरिलीन दी वाइल्ड मैन, लेडी पाईथिया आदि एसे ज्योतिषि हैं जिनका जिक्र पश्चिमी बुध्दीजीवी करते

महाप्रलय बनाम धर्मयुध्द-२

२१ दिसंबर, २०१२ केवल एक ग्रहण

हैं । और कहते हैं कि ये लोग दुनियां समाप्त होने की भविष्यवाणी कर चुके हैं । हालाकि इनमें से ग्रह योगों की गणना कोई नही करता हैं । इनमें से सभी लोग ध्यान में खो जाने वाले और तन्द्रा में रहकर भविष्यवाणी करने वाले लोग हैं ।

विश्व विख्यात नॉस्ट्राडॉमस एक तिपाई पर पानी का भरा हुआ बर्तन रखकर उसमें ध्यान लगाते थे । ज्योतिषियों को नॉस्ट्राडॉमस नक्षत्र शास्त्री कहते थे और ज्योतिषियों को उनकी विशेष चेतावनी होती थी कि ज्योतिष का कार्य करने वाले उनकी भविष्यवाणियों से दूर रहें । परन्तु ग्रहों की स्थितियों को वे समय के अनुमान के तौर पर इस्तेमाल किया करते थे । जैसे- "धूमकेतु के गुजरने के बाद तीसरा क्राईस्ट विरोधी पैदा होगा जो सत्ताईस वर्षो तक युध्द करता रहेगा फिर उसका जल्दी ही अंत हो जायेगा परन्तु दुनियाँ में उसके कारण बहुत तबाही फैलेगी । नास्तिकों को मार दिया जायेगा, बंदी बना लिया जायेगा और देश से निकाल दिया जायेगा"। इसमें कंहि भी ग्रहों की गणना नही हैं परन्तु धूमकेतु के गुजरने को समय के अनुमान के लिये इस्तेमाल किया गया हैं ।

स्टाम बर्गर की विशेष जानकारी उपलब्ध नही हैं परन्तु उनके लिये भी कहा जाता हैं कि वे भी तन्द्रा में ही भविष्यवाणियां किया करते थे । 'बुक ऑफ रिवॉल्युशन' 'बाइबल' की उक्तियों को इक्टठा करके बनाई गई किताब हैं । जिससे भविष्यवाणियां प्रकट होती हैं, इसे किसी जमाने में 'सेन्ट जॉन' नामक व्यक्ति ने लिखा था । इसमें जो उक्तियां हैं उनका अर्थ निकाला जाता हैं, सीधे सीधे इसमें कोई भविष्यवाणी नही हैं । नॉस्ट्राडॉमस की भविष्यवाणियां भी इसी तरह उक्तियों में लिखी हुई हैं और कभी कभी तो ये उक्तियां सही अर्थ दे ही नही पाती हैं । परन्तु संगति बैठाने वाले किसी ना किसी घटना से इनकी संगति बैठा लेते हैं ।

मेरिलीन दी वाइल्ड मैन, एक एसा व्यक्ति था जो तन्द्रा में खोया जंगलों में घूमता रहता था । इसने भी कई भविष्य वाणियां की थी । उस जमाने में लोग इसे जंगली आदमी कहा करते थे । लेडी पाईथिया एक एसी महिला थी जो भविष्य का दर्शन करने के लिये अपने घर के नीचे कंहि तहखाने में चली जाती थी और तन्द्रामग्न होकर फिर भविष्यवाणी किया करती थी । एसा कहा जाता हैं कि उस तहखाने में कोई गैस रिसती थी । जिससे नशा हो जाता था और एसे ही नशे की हालत में लेडी पाईथिया भविष्यवाणी किया करती थी ।

दरअसल ध्यान हो यां ज्योतिष कार्य । इन दोनो में ही बुध का बलवान होना आवश्यक हैं । ध्यान करने वालों के लिये बुध, मन और आत्मा के बीच एक पुल का कार्य करता हैं । चंचल मन को आत्मा के निर्देश पर उचित दिशा में चलाने का कार्य बुध ही करता हैं । परन्तु इसके लिये बुध का बलवान होना आवश्यक हैं । बलवान बुध आत्मा के निर्देश पर मन को स्थिर करता हैं और फिर जैसी व्यक्ति की प्रवृति होती हैं व्यक्ति का मन उस दिशा में चलायमान हो जाता हैं । भारतीय योगी, प्रकृति के इस रहस्य को खूब जानते हैं ।

कभी कभी पूर्व जन्म के संचित कर्म व्यक्ति को इस मार्ग पर चलायमान कर देते हैं और उसे पता नही होता कि वो ये सब क्यों कर रहा हैं । बस अचानक उसका बुध, आत्मा के निर्देश पर मन को एक दिशा में चलायमान कर देता हैं और व्यक्ति वो देखने लगता हैं जिसमें कभी उसकी प्रवृति रही होती हैं । समय रहते व्यक्ति अगर इसे समझ लेता हैं तो उसका उचित उपयोग भी उसकी समझ में आ जाता हैं अन्यथा लोग उसे जगंली अथवा पागल समझने लगते हैं । जैसे मेरिलीन दी वाइल्ड मैन को लोग समझते थे ।

बहरहाल इस सारे दिशाकर्म में एक तालमेल नही होता हैं, एक लयबध्दता नही होती हैं कि जिससे प्रकृति की मर्जी को समझा जा सके । बस एक फिल्म सी आँखों के सामने चलती हैं और व्यक्ति, वो सब दूसरों को बताना आरंभ कर देता हैं । फिर उसमें कई बार अंनत ब्रह्माण्ड के दर्शन होते हैं, कई बार अपने पूर्व जन्म होते हैं, अपना भविष्य होता हैं जिससे व्यक्ति अपने प्रति आश्वस्त हो जाता हैं कि उसे आगे कंहा जाना हैं और होती हैं दुनियां के लिये बहुत सारी भविष्यवाणियां जिसे सुनकर लोग चमत्कृत हो जाते हैं । लेकिन इसकी गहराई में कोई जाना नही चाहता कि आखिर ये सब क्यों हो रहा हैं ।

नॉस्ट्राडॉमस इसे समय रहते समझ गये थे और उन्हौने अपने मरने के बाद की भी भविष्यवाणियां कर डाली थी । ध्यान वो स्थिति हैं जो लग जाये तो प्रकृति का कुछ भी रहस्य बाकि नही रहता हैं । परन्तु इसे समय रहते समझना आवश्यक होता हैं और इस दौरान स्वंय पर नियंत्रण भी अतिआवश्यक हैं । अन्यथा प्रकृति के इस रहस्य को 'गीता' के दौरान विशेष चक्षुओं के बिगैर अर्जुन भी नही देख पा रहा था । ध्यान ही वो विशेष चक्षु हैं जिससे प्रकृति को समझा जा सकता हैं और ये निरंतर अभ्यास से प्राप्त होते हैं । परन्तु जब पूर्व जन्मों के कर्मो से ये हासिल हो जाये तो व्यक्ति पूर्व जन्म के लक्ष्य को याद नही कर पाता हैं । एसे में उसका ध यान लग जाना लक्ष्यहीन होता हैं और एसे ध्यान का जो फल होता हैं वो जनसाधारण को भी लक्ष्यहीन बना देता हैं ।

जब पश्चिमी जगत अपने ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों की बात करता हैं तो वो एसे ज्योतिषियों की बात करता हैं जो ध्यान के लग जाने से सच्ची भविष्यवाणियां तो कर सकते हैं परन्तु उसका लक्ष्य निर्धारित नही कर पाते हैं । क्योकि वो एसी भविष्यवाणियां होती हैं जो अंनत ब्रह्माण्ड के भविष्य के ढेर में से उठायी गई ढेरों की तादात में होती हैं । इन बेतरतीब भविष्यवाणियों की एक सुन्दर माला नही बनाई जा सकती हैं । हम सोचते ही रहते हैं कि इन बेतरतीब भविष्यवाणियों के मोतियों को कैसे आगे पीछे रखें कि एक सुन्दर माला सी बन जाये । परन्तु ये एक असाध्य कार्य होता हैं और हम लक्ष्यहीन से इसमें उलझ जाते हैं । आजकल पश्चिमी जगत की यही उलझन हैं । उसके पास भविष्यवक्ता तो बहुत हैं और दुनियां के समाप्त होने की भविष्यवाणियां भी बहुत हैं परन्तु इसे तरतीब से लगाना उसकी समझ में नही आ रहा हैं । अपने वर्तमान कर्मो से डरा हुआ पश्चिमी जगत नतिजों से आँख मूंद लेना चाहता हैं । उसके कर्म का फल अब तैयार हैं और वो जानता हैं कि ये फल कभी भी तृतिय विश्वयुध्द में बदल सकता हैं । इसलिये वो अपने भविष्यवक्ताओं और उनकी भविष्यवाणियों की बात करता हैं ताकि ये समझा जाये कि जो कुछ होने वाला हैं वो उसके द्वारा किये कर्म नही बल्कि प्रकृति के द्वारा पहले से तय भविष्य हैं ।

वे लोग माया सभ्यता के समाप्त होने को प्राकृतिक संसाधनो के अधांधुध उपयोग से जोड़ते हैं । परन्तु जब अपनी बारी आती हैं तो वे लोग भविष्यवाणियों और भविष्यवक्ताओं की बात करके प्रकृति के कहर की बात करते हैं । ये कैसी दोगली निति हैं ? माया लोग प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से ही समृध द बने थे और उनके समाप्त होने पर वे भी समाप्त हो गये । आज समृध्द कौन हैं ? आज पश्चिमी जगत समृध्द हैं । पश्चिमी जगत समृध्द कैसे बना ? माया लोग समृध्द बने और फिर समृध्दि के कारण समाप्त होने लगे तो आपस में लड़ने लगे और इसी परिप्रेक्ष्य में अब पश्चिमी जगत की बारी हैं ।

वे 'माया सभ्यता' के कैलेन्डर की बात करते हैं । २१ दिसबर, २०१२ को वो समाप्त हो गया दिखता हैं । अब ये पश्चिमी जगत कैसे कह सकता हैं कि माया सभ्यता को वो कैलेन्डर जूलियन कैलेन्डर के आधार पर नही बना हैं, जो कि त्रुटिपुर्ण रहा हैं । वो कहेंगे कि ये ग्रहों की गति के हिसाब से बना हैं और उनसे तारिखों की गणना सही सही की जा सकती हैं । माया सभ्यता की ये विशेषता वो पहले ही गिना चुके हैं कि आजतक के हुए ग्रहण आदि की उसमें सटीक जानकारी मिलती हैं । फिर इसमें प्रलय अथवा दुनियां समाप्त होने की बात कंहा से आती हैं ? आप एसे क्यो नही सोचते कि २१ दिसबंर, २०१२ को एक विशेष ग्रह स्थिति को दर्शाना ही उनका लक्ष्य रहा हो सकता हैं । एक विशेष ग्रहण को दिखाना ही उनकी मंशा रही हो सकती हैं । आखिर पश्चिमी जगत के अनुसार उस दिन सूर्य, पृथ्वी और आकाशगंगा का ब्लैक होल एक सीध में आ जाने वाले हैं । ये ग्रहण ही तो हुआ, इसमें प्रलय अथवा दुनियां समाप्त होने की बात किसने उड़ायी ?

परन्तु वे लोग एसा नही सोचेगें, क्योंकि इससे उनका दुनियां समाप्त होने का जो हौव्वा हैं, वो खड़ा नही हो सकता हैं ।

महाप्रलय बनाम धर्मयुध्द-२

२१ दिसंबर, २०१२ केवल एक ग्रहण

प्रकृति का नियम हैं कि उसमें सबकुछ धीरे धीरे होता हैं । उसमें नये सितारे धीरे धीरे बनते हैं और पुराने सितारे धीरे धीरे समाप्त होते हैं, जिसमें कभी कभी करोड़ो और कभी कभी अरबों वर्ष लगते हैं । फिर हमारा सूर्य अचानक कैसे समाप्त हो जायेगा ?

वो कहेगें कि नही, सूर्य समाप्त नही होगा बल्कि सूर्य, पृथ्वी और आकाशगंगा के ब्लैक होल के एक सीध में आ जाने से पृथ्वी पर अचानक प्रलय जैसी स्थिति बन जायेगी । दक्षिणी ध्रुव और उतरी ध्रुव अपनी स्थिति बदल सकते हैं जिससे पृथ्वी का मौसम बदल जायेगा । बर्फ पिघल जायेगी, समुन्द्र में तूफान उठ खड़े होगें, सारी पृथ्वी पर पानी ही पानी होगा और हिमयुग का आरंभ हो सकता हैं । क्योंकि 'ब्लैक होल' का असीम का गुरुत्वाकृषण सूर्य और पृथ्वी को एक साथ प्रभावित करेगा, जिससे एसा होगा ।

ब्रह्माण्ड के बनने से कई पदार्थ बने और गुरुत्वाकृषण बल से एक दूसरे के प्रति आकर्षित होकर एक दूसरे का चक्कर लगाने लगे । इससे केन्द्र बिन्दु बना जो आकाशगंगाओं, निहारिकाओं और सौरमंडलों के केन्द्र के रुप में स्थापित हुआ । हमारे सौरमंडल का केन्द्रबिन्दु हमारा सूर्य हैं, जिसके गुरुत्वाकृषण बल से आकर्षित होकर पृथ्वी और अन्य ग्रह उसका चक्कर लगाते रहते हैं । जब कभी कुछ ग्रह और पृथ्वी आदि इसके सीध में आते हैं तो ग्रहण होते हैं । इसी प्रकार हमारा सौर मंडल हमारी आकाशगंगा का एक हिस्सा हैं और इसके केन्द्रबिन्दु जोकि अब ब्लैक होल कहा जाता हैं, का चक्कर लगाता रहता हैं ।

हमारे सौर मंडल का मुखिया हमारा सूर्य हैं जोकि हमारी पृथ्वी से सैकड़ो गुणा बड़ा हैं । ब्लैकहोल का प्रभाव पहले सूर्य पर पड़ना चाहिये फिर पृथ्वी पर पड़ना चाहिये । हमारे सौरमंडल के मुखिया सूर्य के चेहरे पर तो अब तक कोई शिकन नही उभरी हैं । आखिर ये कैसा ब्लैक होल का प्रभाव हैं कि एक विशेष पैर्टन पर ही अपना प्रभाव दिखायेगा । आखिर आंशिक ग्रहण, अर्ध ग्रहण और पुर्ण ग्रहण की कोई रुपरेखा तो बननी चाहिये । २१ दिसंबर, २०१२ को ही अपना प्रभाव दिखाने वाला ब्लैक होल तो फिर सूर्य से ज्यादा प्रभाव दिखाने वाला ना हुआ । एक दिन के लिये तो चन्द्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण ही बनते हैं । सारी आकाशगंगा के केन्द्रबिन्दु होने का प्रभाव तो वर्षो पहले आरंभ हो जाना चाहिये । एक दिन के लिये तो ग्रहण के रुप में हमारे सौर मंडल का मुखिया सूर्य प्रभाव दिखाता हैं । जिसकी हमें आदत हैं ।

इसके जवाब में वे कह सकते हैं कि ध्रुवों की बर्फ पिघल रही हैं और धरती गर्म हो रही हैं । ये २१ दिसबंर, २०१२ का आरंभ हैं । परन्तु इसके लिये तो वे लोग पहले ही मनुष्य को जिम्मेदार ठहरा चुके हैं । जंगलो को काटना, बेहिसाब इंधन की खपत और ओजोन परत का पतला होना मनुष्य के अपने किये कर्म हैं । लेकिन एक ही नतिजे के लिये वे लोग मनुष्य को और २१ दिसबर, २०१२ की प्रलय को एकसाथ जिम्मेदार नही ठहरा सकते हैं । मनुष्य तो सैकड़ो वर्षो से जंगल काट रहा हैं, बेहिसाब इंधन जला रहा हैं और ओजोन परत को पतला कर रहा हैं । जबकि ब्लैक होल की सीध में सूर्य और पृथ्वी तो अब आने वाले हैं ।

बहरहाल ये सब बहस के विषय हो सकते हैं । परन्तु प्रलय की बात अपनी जगह हैं । क्या कभी प्रलय हो सकती हैं ? पश्चिमी जगत भले ही हौव्वा खड़ा कर रहा हो परन्तु इसकी खोज तो होनी चाहिये । जाने अंजाने पश्चिमी जगत ने माया सभ्यता को तूल तो दे दिया हैं और ये सिध्द करने की कोशीश की हैं कि माया के लोगों को ग्रहों की चाल का विशेष ज्ञान था और वे बहुत बारिकी से उनकी गति का ध्यान रखते थे । अर्थात अपने बहुत से ज्योतिषियों और भविष्यवाणियों के बावजूद भी वो ये मानते हैं कि माया सभ्यता का ग्रहों की चाल वाला कैलेन्डर विशेष प्रभाव वाला हैं । बस अब उन्हे समझाना ये हैं कि वे लोग आकाशगंगा में ज्यादा ना भटके और ब्लैक होल की तरफ ना जायें । वे केवल अपने सौरमंडल का विश्लेषण करें और सौरमंडल के मुखिया सूर्य पर अध्यन करें तो उन्हे वो पता चलेगा जो वे जानना चाहते हैं ।

हमारे जगत की आत्मा सूर्य हैं, हमारा भविष्य सूर्य हैं । हमारी आकागंगा में सूर्य कंहा हैं और किसका चक्कर लगा रहा हैं, प्रलय को जानने का मूल विषय हैं । क्या कोई पश्चिमी विद्वान ये बता सकता हैं कि सूर्य कंहा स्थित हैं ? वो किस केन्द्रबिन्दु का चक्कर लगा रहा हैं ? उसका कक्ष कंहा हैं ? कितने समय में वो अपना एक चक्कर पुरा करता हैं और किस किस स्थान पर उसके होने से क्या क्या प्रभाव पड़ते हैं ? ये कुण्डली में गणना करने वाले सूर्य की बात नही हैं, वो तो असल में पृथ्वी हैं ।

'ज्योतिष संहिता' नामक एक ग्रन्थ पुरातन मत का समर्थन करते हुऐ कहता हैं कि, 'चतुरुतरोतराः स्युविशंति भागा भवन्ति मेषाद्ये । मानमिहार्धे पूर्वे, मीनाद्योचोत्क्रमादर्ध्वे' ।। अर्थात हमारे ब्रह्माण्ड में, निहारिका में अथवा हमारी आकाश गंगा में जिस केन्द्र बिन्दु से मेष, मीन राशियॉ २० अशों पर हो, वृषभ, कुम्भ २४ अशों पर हो, मिथुन, मकर २८ अशों पर हो, कर्क, धनु ३२ अशों पर हो, सिंह, वृश्चिक ३६ अशों पर हो और कन्या, तुला राशियॉ ४० अशों पर हो, ऐसे स्थान पर हमारा सौर मंडल स्थित हैं ।

ग्रन्थ में इस बात का भी उल्लेख किया गया हैं कि ध्रुव तारा केवल हमारी पृथ्वी का ही केन्द्र बिन्दु नही हैं बल्कि हमारे सौर मंडल का और सम्पुर्ण राशिचक्र का भी केन्द्र बिन्दु हैं । समस्त राशिचक्र और हमारा सौर मंडल इसी ध्रुव तारे से आबध्द होकर प्रवाह रूपी वायु वेग से गतिशील हैं । पश्चिमी सभ्यता का बिग बैन सिध्दांत कहा जाये अथवा भारतीय पंच तत्व का सिध्दांत कहा जाये दोनो ही रूप में ब्रह्माण्ड गतिशील हैं ये एक स्थापित तथ्य हैं ।

ये कैसे गतिशील हुए हैं इस परिप्रेक्ष्य में ग्रन्थ कहता हैं कि जैसे एक घूमती हुई कील से लाखों लटटूओं को धागे के सहारे लटका कर जोरों से घुमा दिया जाये तो परिणाम स्वरूप वो लटटू उस कील से छिटक कर दूर होगें और अलग अलग होकर घूमने लगेगें । वैसे ही बिग बैन का जोर दार धमाका और पंच तत्वो का एक दूसरे से क्रिया करना पदार्थ को विखडिंत करता हैं । अब जैसे जैसे वेग बढ़ता जायेगा वैसे वैसे वो लटटू जोरो से घुमते हुए उस कील से दूर भी होते जायेगें और धागे से बंधे होने के कारण कील को केन्द्र बिन्दु भी बनाये रखेगें । दूसरी ओर गुरुत्वाकर्षण बल उस कील का कार्य करता हैं जोकि उपर उदाहरण स्वरूप बतलायी गई हैं । गुरुत्वाकर्षण बल की जिस कील का उदाहरण इस ग्रन्थ में बतलाया गया हैं वही पश्चिमी जगत का ब्लैक होल हैं ।

सूर्य का कक्ष, ध्रुव तारे के केन्द्र बिन्दु से ३० अशं की दूरी पर हैं । सारा राशिचक्र ध्रुव तारे के आसपास से ३० - ३० अशों के भागों में बटा हुआ हैं । हम पृथ्वी से देखते हैं तो आकाश का वैसा ही चित्र दिखता हैं जैसा कि हम ध्रुव तारे से समझ रहे हैं । इसका कारण भी वही हैं जोकि पहले बताया जा चुका हैं । अर्थात हमारा सौर मंडल एक बिन्दु के रूप में ध्रुव तारे की परिक्रमा कर रहा हैं और सूर्य का ही नही एक बिन्दु के रूप में पृथ्वी का केन्द्र बिन्दु भी ध्रुव तारा ही हैं । उदाहरण के तौर पर एक परिवार के रूप में अगर हम किसी स्थान की परिक्रमा कर रहे हो तो जाहिर हैं कि जो कुछ परिवार के मुखिया को दिखाई देगा वही परिवार सभी सदस्यों को भी दिखाई देगा । भले ही सूर्य सौर मंडल का मुखिया हैं परन्तु उसके परिवार के दूसरे सदस्य भी सभी कुछ देखते और मेहसूस करते हैं । दूसरे ग्रहों बृहस्पती, शनी आदि का तो हमें पता नही हैं परन्तु पृथ्वी पर हम रहते हैं तो पृथ्वी की बात तो हम दावे से कह सकते हैं । यंहा हमारे खगोल वेताओं और ऋषि, मुनियो का ये रहस्य समझ आता हैं कि क्यों उन्हौने पृथ्वी को सूर्य का नाम दिया हैं । अगर हम जातक और होरा की बात ना करें और सूर्य को सृष्टि के परिप्रेक्ष्य में देखें तो जो कुछ सूर्य से हम समझना चाहते हैं, वही हम पृथ्वी की गतिविधियों से समझ सकते हैं ।

सूर्य जोकि महाकाल का सूचक हैं, महासमय का सूचक हैं, हमारे सौरमंडल का मुखिया हैं और अपने सारे परिवार के साथ ध्रुव तारे का चक्कर लगाता

महाप्रलय बनाम धर्मयुध्द-२

२१ दिसंबर, २०१२ केवल एक ग्रहण

हैं । सूर्य ७१ वर्ष में एक अंश चलता हैं और अपने पुरे परिवार के साथ चलता हैं । जिसे शायद हम अयनाशं के तौर पर जानते हैं । अब ये एक खोज का विषय हैं कि हमारे खगोल वेताओं ने ऋषि, मुनियों ने क्यों पृथ्वी को सूर्य का नाम दिया हैं । शायद इसलिये कि जातक और होरा की सीमा तक पृथ्वी, सूर्य से प्राप्त प्रभाव को हम तक पहुचा ही देगी परन्तु सूर्य के मूलभूत प्रभाव और रहस्य हम उसके नाम से ही याद रखें ।

सूर्य, सृष्टि का पिता हैं, सृष्टि की आत्मा हैं, सृष्टि की बुनियाद हैं, भविष्य हैं और भी ना जाने क्या क्या हैं । पृथ्वी तो हमारा घर हैं उसकी कमी बेशी तो रोज ही हमारे सामने प्रकट होती हैं । सूर्य को सृष्टि से जोड़ा गया हैं और पृथ्वी को सूर्य का नाम देकर शायद हमे घर बैठे बैठे सृष्टि से जोड़ दिया गया हैं । बहरहाल ये गहन रहस्य हैं जो समय के साथ जब हम पर प्रकट होगें तो हमे आश्चर्यचकित हो जाना पड़ेगा ।

एक और पुरातन मत हैं कि, 'तस्मिन्नृक्षे कृतमूलो द्वितियोक्ष तुर्यमानेनसम्मित स्तैल यंत्रवत्, ध्रुव कृतिभागः'। सूर्य, ध्रुव तारे से बहुत नीचे रहकर उसकी परिक्रमा करता हैं । उसकी ये परिक्रमा २५५६० वर्ष में पुर्ण होती हैं । अर्थात एक राशि में सूर्य अपने पुरे परिवार के साथ २१६० वर्ष तक रहता हैं । इस तरह ७१ वर्ष में सूर्य एक अंश चलता हैं । जोकि साधारणयता अयनांश का समय माना जा सकता हैं ।

आज से दो हजार वर्ष पहले स्थिर रेखांश के संपात बिन्दु से रोहिणी नक्षत्र ४६ अशों पर था । जोकि आजकल ४७ अशों पर हैं । पुनर्वसु नक्षत्र ६३ अशों पर था जोकि आजकल ६०-३० अशों पर हैं । मधा नक्षत्र १२६ अशों पर था जोकि आजकल १२६-३० अशों पर हैं । चित्रा नक्षत्र १८० अशों पर था जोकि आजकल १७६ अशों पर हैं । ये दर्शाता हैं कि ध्रुव तारे के साथ साथ राशिचक्र भी गतिशील हैं । ये राशिचक्र भी उसी दिशा में गतिशील हैं जिस दिशा में हमारा सूर्य अपने सौर मंडल के साथ गतिशील हैं अर्थात जिस दिशा में हमारा सूर्य, ध्रुव तारे की परिक्रमा कर रहा हैं । इस तरह सूर्य वर्तमान में १५६ अशों पर हैं जोकि 'कन्या' राशि के छह अंश हैं ।

अब देखें सूर्य को कन्या राशि में संचार करते हुऐ छह अंश हुऐ हैं अर्थात औसतन ४२६ वर्ष इससे पहले वो सिंह राशि में संचार करता रहा था । ध्यान दें कि सूर्य के राशि बदलने का समय और 'मायासभ्यता' के विलुप्त होने का समय आपस में मेल खाता हैं । १५२६ से 'माया सभ्यता' विलुप्त होने लगी थी । इससे हम ये खोज कर सकते हैं कि सूर्य के राशि बदलने से सभ्यताओं के उत्थान और पतन हो सकते हैं ।

थोड़ा और पीछे जायें, लगभग दो हजार वर्ष पीछे । जब सूर्य ने सिंह राशि में प्रवेश किया होगा, अयनांश की घटबढ़ से कुछ वर्ष आगे पीछे हो सकते हैं परन्तु उसी समय 'ईसाई धर्म' का उत्थान हुआ था । धर्म कारक सूर्य अपनी राशि में अगर धर्म के उत्थान में सहयोग करता हैं, तो क्या बड़ी बात हैं । सूर्य क्षत्रिय ग्रह भी हैं । अगर धर्म के नाम पर 'ईसा मसीह' को सूली चढ़ाया गया, तब भी सूर्य के क्षत्रिय धर्म का फल प्रकट होता हैं । इसके बाद धर्म के नाम पर बहुत हिंसा हुई हैं और पृथ्वी का इतिहास युध्दों और हिंसाओं से भरा पड़ा हैं । जो कि सन् १६०० के बाद कम होना आरंभ हुआ हैं, जब सूर्य ने सिंह राशि छोड़कर कन्या राशि में प्रवेश किया था । कन्या राशि क्षत्रिय राशि नही हैं बल्कि वैश्य वर्ण की राशि हैं । यंही से व्यापार, व्यवसाय और पुंजीवाद को बढ़ावा मिला हैं । सूर्य के कन्या राशि में संचार से दुनियां में इस बदलाव को हम मेहसूस कर सकते हैं । आखिर 'ईस्ट इंडिया' कंपनी को हम कैसे भूल सकते हैं जिसने इसी समय के दौरान भारत में अपनी जड़े जमायी थी ।

कुछ और पीछे चलते हैं । दो राशि पीछे जब सूर्य ने कर्क राशि में प्रवेश किया होगा । ये समय लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व के आसपास का युग हो सकता हैं अर्थात 'महाभारत' काल । इस समय सूर्य अपनी मित्र राशि में था शायद इसलिये 'कृष्ण' भगवान का जन्म हुआ और 'गीता' जैसी महान रचना प्रकट हुई । यही समय 'चन्द्रवंशी' राजाओं का स्वर्णिम समय रहा हैं । क्या चन्द्रवंशी राजा इसलिये अधिक प्रसिध्द हुऐ क्योंकि सूर्य उस समय चन्द्र की राशि कर्क में था ? अथवा तो उस समयके ऋषि-मुनि जानते थे कि सूर्य, कर्क राशि में संचार कर रहा हैं इसलिये चन्द्रवंश विशेष लाभदायक फल पायेगा और फलस्वरुप चन्द्रवंश प्रकाश में आया । एसी सोच के चलते हम ये भी सोच सकते हैं कि सूर्यवंश तब प्रकाश में आया होगा जब सूर्य अपनी उच्च राशि में मेष में रहा होगा । क्या 'राम' भगवान का जन्म एसे ही किसी समय में हुआ हैं ? चाहे दस हजार वर्ष पहले सूर्य मेष राशि में रहा हों अथवा तो ३५००० वर्ष पूर्व सूर्य मेष राशि में रहा हो । आखिर हम विश्लेषण कर आये हैं कि २५५६० वर्षो में सूर्य एक परिक्रमा पुर्ण कर लेता हैं । क्या इसिलिये 'वाल्मिकी' ने राम के जन्म लेने से भी पहले 'रामायण' लिख ली थी क्योंकि वे जानते थे कि अब सूर्य फिर मेष राशि में संचार करेगा और 'राम' का जन्म होगा ? क्या सूर्य संचार बार बार समय को दोहराता हैं ? जो भी हो, ये सब खोज और अनुसंधान के विषय हैं परन्तु इस बात से इन्कार नही किया जा सकता कि सूर्य का संचार दुनियां के लिये अपना विशेष फल प्रकट करता हैं ।

इसी परिप्रेक्ष्य में अगर भविष्य की बात करें और प्रलय और दुनियां के समाप्त होने की बात करें तो हम देखेगें कि अभी इसमें देर हैं । हम नही जानते कि प्रलय कैसे होती हैं अथवा दुनियां के समाप्त होने के क्या कारण होते हैं ? परन्तु हम सूर्य की गणना से ये समझ सकते हैं कि सूर्य जगत की आत्मा हैं, जगत पिता हैं अथवा तो हमारा भविष्य हैं । इसके निर्बल हुऐ बिगैर प्रलय नही आ सकती अथवा तो दुनियां नही समाप्त हो सकती हैं । हमारा भविष्य, हमारा पिता सूर्य जब तक निर्बल नही होगा तब तक प्रलय नही आ सकती हैं । हमारी दुनियां समाप्त नही हो सकती हैं और अभी वो कन्या राशि में चल रहा हैं जोकि वैश्य वर्ण की राशि हैं । व्यापार, व्यवसाय और पुंजीवाद में कोई घटबढ़ हो सकती हैं । जिससे कोई युध्द आदि छिड़ सकता हैं परन्तु दुनिया समाप्त नही हो सकती हैं ।

ये हम मान सकते हैं कि कन्या राशि में होने से सूर्य नीचाभिलाषि हैं अर्थात उसकी अगली राशि, नीच राशि तुला हैं और आने वाला समय अथवा भविष्य अधिक उज्वल नही हैं । आज नही तो कल वो अपनी नीच राशि तुला में प्रवेश करके निर्बल हो जायेगा, जिससे प्रलय अथवा दुनियां के समाप्त होने की हम कल्पना कर सकते हैं । परन्तु इसके लिये कम से कम १७०० वर्षो का समय लगने वाला हैं ये २१ दिसंबर, २०१२ को नही होने वाला हैं ।

अगर हम सूर्य की सटीक गणनाऐं अथवा विश्लेषण करके उचित नतिजें निकालें तो शायद इससे बेहतर फलादेश कर सकते हैं । इससे सूर्य के राशियों में बदलाव से तो हम भविष्यवाणी कर ही सकते हैं परन्तु इसमें नक्षत्रों और षोड़षवर्गो का समावेश करके कुछ और सटीक और सूक्ष्म फलादेश कर सकते हैं । बहरहाल भारतीय विद्वानों को इस दिशा में पहल करनी होगी और इस दिशा में अनुसंधान करना होगा ताकि विदेशों से आयातित और पथभ्रष्ट करने वाली भविष्यवाणियों से हम दिशाहीन और लक्ष्यहीन ना हो ।

। समाप्त ।